पाठ 5

मृत्यु के बाद क्या होगा?

इस पाठ में आप पढ़ेंगे

- मृत्यु के बाद–क्या?
- स्वर्ग और नरक कैसे हैं?
- आपका चुनाव कितना महत्वपूर्ण है?
- आप स्वर्ग कैसे जा सकेंगे?

भाग I

मृत्यु के बाद–क्या?

आरंभिक अस्थायी अवस्था

जब आपकी मृत्यु होती है तो क्या होता है? आपकी आत्मा देह छोड़कर, दो में से किसी एक जगह पर जाएगी ताकि देह के पुनरुत्थान तक ठहरे।

अगर आपने यीशु मसीह को मुक्तिदाता ग्रहण किया है तो आपकी आत्मा परमेश्वर के पास स्वर्ग जाती है। अगर आपने उसका अनन्त जीवन का दान अस्वीकार कर दिया है तो आप अधोलोक में जाएंगे।

लूका 16:22,23 ऐसा हुआ कि वह कंगाल मर गया और स्वर्गदूतों ने उसे लेकर इब्राहीम की गोद में पहुंचाया; वह धनवान भी मरा; .....अधोलोक में पीड़ा में था।

जब हम मृत्युरूपी नींद के विषय में कहते हैं तो हमारा अर्थ देह से होता है। देह पुनरुत्थान के समय फिर से जी उठेगी। आत्मा मृत्यु में नहीं सोती है बल्कि पूर्ण चैतन्य रहती है। देह तो एक घर के समान है, जिसमें से प्राण या आत्मा निकलकर उत्तम घर में जाती है।

2 कुरिन्थियों 5:1,8 क्योंकि हम जानते हैं कि जब हमारा पृथ्वी पर का डेरा सरीखा घर गिराया जाएगा तो हमें परमेश्वर की ओर से स्वर्ग पर एक ऐसा भवन मिलेगा ..... चिरस्थाई है। ..... देह से अलग होकर प्रभु के साथ रहना और भी उत्तम समझते हैं।

पुनरुत्थान

यीशु फिर से शीघ्र आ रहे हैं ताकि अपने भक्तों को ले जावें। जैसे कन्द में से कुमुदिनी खिलती है वैसे ही आपकी आत्मा नयी देह के साथ जी उठेगी।

यूहन्ना 11:25 यीशु ने उससे कहा पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूँ जो कोई मुझ पर विश्वास करता है वह यदि मर भी जाए तो भी जीएगा।

1 कुरिन्थियों 15:42-43 शरीर नाशमान दशा में बोया जाता है और अविनाशी रूप में जी उठता है। निर्बलता के साथ बोया जाता है; और सामर्थ के साथ जी उठता है।

फिलिप्पियों 3:20-21 हम एक उद्धारकर्ता प्रभु यीशु मसीह के वहां से आने की बाट जोह रहे हैं। हमारी दीनहीन देह का रूप बदलकर अपनी महिमा की देह के अनुकूल बना देगा।

याद कीजिए

1 थिस्सलुनीकियों 4:16-17 प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा। जो मसीह में मरे हैं वे पहिले जी उठेंगे। तब हम जो जीवित हैं और बचे रहेंगे उनके साथ बादलों पर उठा लिए जाएँगे कि हवा में प्रभु से मिलें और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे।

मसीह का न्याय सिंहासन

परमेश्वर की सन्तान होने के कारण, जो कुछ हमने पृथ्वी पर किया, क्यों किया है, इसी के आधार पर हमारा न्याय होगा। निष्ठापूर्वक सेवा के लिए पुरस्कार दिया जाएगा। परमेश्वर अपने सनातन राज्य में हमें निर्धारित उत्तरदायित्व और विशेषाधिकार सौंपेगा।

2 कुरिन्थियों 5:9-10 हमारे मन की उमंग यह है....हम उसे भाते रहें। क्योंकि अवश्य है कि हम सबका हाल मसीह के न्याय आसन के सामने खुल जाए कि हरएक **व्यक्ति** अपने अपने भले बुरे कामों का बदला जो उसने देह के द्वारा किए हों पाए।

एक हज़ार वर्ष

इससे पहले न्याय के बाद यीशु अपने भक्तों के साथ पृथ्वी पर वापस आएगा। शैतान को एक हज़ार वर्ष के लिए कैद किया जाएगा।

यीशु अपना राज्य स्थापित करेगा। समस्त पृथ्वी पर एक हज़ार वर्ष तक शांति और सम्पन्नता का अद्‌भुत शासन करेगा। इसी को एक हज़ार वर्ष का राज्य कहा जाता है। बनैले पशु आपस में और मनुष्य के साथ मेल मिलाप से रहेंगे।

प्रकाशितवाक्य 20:4 वे जीवित होकर मसीह के साथ हज़ार वर्ष तक राज्य करते रहे।

यशायाह 11:6 तब भेड़िया भेड़ के बच्चे के संग रहा करेगा, और चीता बकरी के बच्चे के साथ बैठा करेगा, और एक छोटा लड़का उनकी अगुआई करेगा।

यशायाह 35:1,5,10 मरुभूमि मगन होकर केसर की नाईं फूलेगी। तब अन्धों की आंखें खोली जाएंगी और बहिरों के कान भी खोले जाएँगे; और यहोवा के छुड़ाए हुए हर्ष और आनन्द पाएँगे और शोक और लम्बी सांस का लेना जाता रहेगा।

अविश्वासियों का मृतकोत्थान और न्याय

एक हज़ार वर्ष के राज्य, और मसीह और शैतान के मध्य अन्तिम युद्ध के पश्चात्, शैतान आग की झील में डाल दिया जायेगा। तब मृतक जिन्होंने परमेश्वर के उद्धार की योजना स्वीकार नहीं की, जीवित हो जाएँगे और उनका न्याय होगा।

जो शैतान के अनुयायी रहे हैं, वे सब, उस दण्ड की जगह जाएँगे जो शैतान के लिए तैयार की गई है।

प्रकाशितवाक्य 20:11,12,15 फिर मैंने एक बड़ा श्वेत सिंहासन और उसको जो उस पर बैठा हुआ है देखा, ...फिर मैंने छोटे बड़े सब मरे हुओं को सिंहासन के सामने खड़े हुए देखा और पुस्तकें खोली गईं। और जैसे उन पुस्तकों में लिखा हुआ था, उनके कामों के अनुसार मरे हुओं का न्याय किया गया। जिस किसी का नाम जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ न मिला, वह आग की झील में डाला गया।

धर्मीजन (वे जिन्होंने परमेश्वर से अपना सम्बन्ध सही किया है उसकी संतान हैं) सदा सर्वदा तक उस सुख को पायेंगे जो परमेश्वर ने उनके लिए तैयार किया है। जिन्होंने उसका उद्धार अस्वीकार कर दिया है वे सर्वदा परमेश्वर से अलग रहेंगे।

मत्ती 25:46 और यह अनन्त दण्ड भोगेंगे, परन्तु धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे।

आपका काम

- सही शब्द चुनिये।
- जब परमेश्वर की संतान मरती है तो उनकी आत्मा.....(स्वर्ग, नरक) में जाती है।
- जिन्होंने परमेश्वर के उद्धार की योजना को स्वीकार नहीं किया.....(स्वर्ग, नरक) को जाते हैं।
- "मृत्युरूपी नींद".....(आत्मा, देह) की अस्थायी स्थिति को बताता है।

भाग 2

स्वर्ग और नरक कैसे हैं?

स्वर्ग या नरक : इन्हीं दो में से एक, आपका अनन्त घर होगा। शब्द "नरक" अधोलोक और आग की झील दोनों को दर्शाता है।

नरक	स्वर्ग
परमेश्वर से अलग	**परमेश्वर के साथ**
मत्ती 25:41 हे स्रापित लोगो, मेरे सामने से उस अनन्त आग में चले जाओ.....।	यूहन्ना 14:2 मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं, मैं तुम्हारे लिए जगह तैयार करने जाता हूँ। प्रकाशितवाक्य 21:3 परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच में।

प्रत्येक भली वस्तु परमेश्वर से मिलती है। ज्योति, जीवन, सुन्दरता और आन्नद परमेश्वर से प्राप्त होता है। अगर परमेश्वर से अलग हैं तो—अन्धकार, पीड़ा, शोक और मृत्यु मिलती है।

नरक	स्वर्ग
पीड़ा	**सदैव का सम्पूर्ण आनन्द**
लूका 16 :23-24 अधोलोक में उसने पीड़ा में पड़े हुए, पुकार कर कहा, मैं इस ज्वाला में तडप रहा हूँ। मत्ती 25:30 बाहर के अन्धेरे में डाल दो, जहाँ रोना और दाँत पीसना होगा।	प्रकाशितवाक्य 21:10,11,16,18 पवित्र नगर.....परमेश्वर की महिमा उसमें थी। नगर को नापा तो साढ़े सात सौ कोस का निकला उसकी लम्बाई-चौड़ाई और ऊँचाई बराबर थी।....चोखे सोने का था। प्रकाशितवाक्य 22:5 फिर रात न होगी। प्रभु परमेश्वर उन्हें उजाला देगा। और वे युगानयुग राज्य करेंगे।

प्रकाशितवाक्य 20:10 वे रात-दिन युगानुयुग पीड़ा में तड़पते रहेंगे।

प्रकाशितवाक्य 21:3,4 परमेश्वर आप....उनकी आँखों से सब आँसू पोंछ डालेगा। इसके बाद मृत्यु न रहेगी, और न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी।

आइये विचार करें, जब हम अनन्त के लिए अपना घर चुनेंगे, तो हमारे पड़ौसी किस तरह के होंगे।

नरक

मत्ती 25:41 उस अनन्त आग में चले जाओ जो शैतान और उनके दूतों के लिए तैयार की गई है।

प्रकाशितवाक्य 21:8 पर डरपोकों और अविश्वासियों, और घिनौनों, और हत्यारों और व्यभिचारियों, और टोन्हों और मूर्तिपूजकों, और सब झूठों का भाग उस झील में मिलेगा, जो आग और गन्धक से जलती रहती है।

स्वर्ग

यूहन्ना 14:1,3 फिर आकर तुम्हें अपने यहाँ ले जाऊँगा कि जहां मैं रहूं वहां तुम भी रहो।

इब्रानियों 12:22,23 तुम जीवते परमेश्वर के नगर स्वर्गीय यरूशलेम के पास, उन लाखों स्वर्गदूतों और सिद्ध किये हुए धर्मियों की आत्माओं.....के पास आ गये हो।

आपका काम

भाग दो में दिये गये बाइबल के पदों की प्रत्येक पंक्ति के सामने जो वस्तु अपने अनन्त घर में नहीं चाहते हैं, या अनुभव नहीं करना चाहते हैं, तो उसके सामने नहीं लिखे। जो आप चाहें उसके सामने 'हाँ' लिखें।

भाग 3

आपका चुनाव कितना महत्वपूर्ण है?

किसी व्यक्ति को नरक भेजने के लिए परमेश्वर को दोष न दें। वह प्रत्येक को मुक्ति देना चाहता है। प्रत्येक को स्वयं के लिए स्वर्ग और नरक के बीच चुनना चाहिए।

व्यवस्थाविवरण 30:19,20 मैंने जीवन और मरण तुम्हारे आगे रखा है जीवन ही को अपना लें...परमेश्वर यहोवा से प्रेम करो, उसकी बात मानो क्योंकि तेरा जीवन यही है।

चाहे आप स्वर्ग या नरक चुनें, दूसरे अपने जायेंगे। अपने कुटुम्ब और मित्रों के विषय सोचें आप उन्हें कहां ले जा रहे हैं?

आपका काम

परमेश्वर का धन्यवाद करें कि यीशु को आपके उद्धार के लिए भेजा। आपके कुटुम्बी या मित्र जो नरक जा रहे हैं, उनके लिए प्रार्थना करें। परमेश्वर से सहायता मांगें, ताकि आप उनको चिता सकें, और मुक्तिदाता के पास ला सकें।

भाग 4

आप स्वर्ग कैसे जा सकेंगे?

यदि आप स्वर्ग के लिए दूसरों की अगुवाई करना चाहते हैं, तो निश्चय ही पहले आप स्वयं इन कदमों को उठायें, तब ही आप मित्रों की भी इसमें सहायता कर सकेंगे।

गलत मार्ग से दूर हों

हम परमेश्वर से दूर, नरक की तरफ, पाप के मार्ग पर बढ़ते जा रहे थे। हम पाप से अलग होते हैं, परमेश्वर की आज्ञाओं के पालन करने का निश्चय करते हैं, और उसके मार्ग पर चलते हैं। यह पश्चात्ताप है, स्वर्ग जाने का पहला कदम है।

स्वीकार करना चाहिए, हमने दूसरों का बुरा किया है। हम गलती सुधारने का पूरा प्रयास करें। अपने शत्रुओं को क्षमा करें। जिनका बुरा किया है उनसे क्षमा मांगें, जो चोरी की है उसे लौटायें। हम जब परमेश्वर के सामने मान लेंगे, वह हमको क्षमा करेगा, जो कुछ करना चाहिए, उसमें सहायता करेगा।

याद करें

1 यूहन्ना 1:9 यदि हम अपने पापों को मान लें तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है।

2 पतरस 3:9 तुम्हारे **विषय** में धीरज धरता है और नहीं चाहता कि कोई नाश हो, वरन् यह कि सब को मन फिराव का अवसर मिले।

सही मार्ग स्वीकार करें

परमेश्वर ने आपको, मार्ग का मानचित्र दिया है, उस पर विश्वास करें—अर्थात् बाइबल। उसमें लिखा है कि प्रभु यीशु मार्ग हैं।

याद कीजिये

यूहन्ना 14:6;6:37 यीशु ने कहा मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूँ, बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता। जो कोई मेरे पास आयेगा उसे मैं कभी न निकालूंगा।

सही मार्ग पर चलते रहिये

इसका अर्थ है आप परमेश्वर के पुत्र यीशु ख्रीष्ट को अपना मुक्तिदाता और अपने जीवन का स्वामी मानें। विश्वास करें कि वह आपको स्वीकार भी करता है, उस पर भरोसा रखें।

याद कीजिये

प्रेरित 16:31 उन्होंने कहा, प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर तो तू और तेरा घराना उद्धार पायेगा।

यूहन्ना 20:31 ये इसलिए लिखे गये हैं कि तुम **विश्वास** करो कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है और **विश्वास** करके उसके नाम से जीवन पाओ।

अन्त तक सही मार्ग पर चलते रहिये

जीवन भर यीशु के पीछे चलिये। जब बाइबल पढ़ेंगे और प्रार्थना करेंगे तो वह **अगुवाई** देगा और सहायता करेगा।

1 पतरस 2:25 क्योंकि तुम पहले भटकी हुई भेड़ों की नाईं थे पर अब अपने प्राणों के रखवाले और अध्यक्ष के पास फिर आ गये हो।

आपका काम

- क्या अपने उपरोक्त कदम उठाया.....
  यदि नहीं तो अब उठायें.....